ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

भूमण्डलीकरण के युग में स्त्री का बाजारीकरण

Comercialisation of Women in The Era of Globalization

Paper Submission: 02/07/2021, Date of Acceptance: 23/07/2021, Date of Publication: 25/07/2021

गजेन्द्र सिंह
शोधार्थी
राजनीति शास्त्र विभाग,
राजकीय पी.जी. कॉलेज
बाड़मेर, राजस्थान, भारत

सारांश

उदारवादी सोच ने निजीकरण व वैश्वीकरण को जन्म दिया। इस प्रवाह ने दुनिया व उसकी सोच पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभाव डाले। मूलतः आर्थिक सोच ने समाज के मूल अंग स्त्री को बाजारीकरण में धकेल दिया। यह एक ताकत के साथ बाजार की वस्तु भी बना दी गई। यह न केवल भारत बल्कि पुरी दुनिया में हुआ शोध पत्र में स्त्री यौन दासता, धन की गुलाम स्त्री की स्थिति का अध्ययन किया गया। साथ ही कामकाजी स्त्रियों की स्थिति पर भूमण्डलीकरण के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

Liberal thinking gave birth to privatization and globalization. This flow affected the world and its thinking in both positive and negative ways. Basically economic thinking pushed the basic part of the society into the marketization of women. It was also made a market commodity with a force. This happened not only in India but all over the world. In the research paper, the condition of female sex slavery, slave of wealth was studied. In addition, an analytical study was conducted on the impact of globalization on the status of working women.

मुख्य शब्द : उदारीकरण, बाजारीकरण, भूमण्डलीकरण, मानववाद, साम्राज्यवाद, आव्रजन, तीसरी दुनिया।

Liberalisation, Marketisation, Globalisation, Humanism, Imperialism, Immigration, Third World

प्रस्तावना

विश्व मानव विकास ने इतनी करवटे बदली! जिसकी लाठी उसकी भैस जंगल राज मत्स्य न्याय की बर्बर पाश्विक अवस्था व स्थिति से उभरकर मनुष्य राजा को अधिकार व आधिपत्य देकर शासक बनाया और वह स्वयं शासित हो गया, जिसे प्रजा कहा जाने लगा। राजा ने सुरक्षा के नाम पर भोग संस्कृति को जन्म दिया और साम्राज्यवाद व सामन्तवाद की "विलासी जीवन शैली" का आविष्कार किया। साम्राज्यवाद की विषैली विस्तारवादी लिप्सानीति ने मानव को त्रस्त कर दिया और हिंसा की दावानल ने शांति वन को कई बार जलाकर राख कर दिया व मानवता के सागर में छिपी बडवानल ने मानवता को ही निगल लिया।

शोध प्रविधि

विश्लेषणात्मक एवं अनुभवमूलक अध्ययन।

अध्ययन का उददेश्य

भूमण्डलीकरण के युग में स्त्री को पुरातन गुलामी से निकालकर नई गुलामी से कैसे बचाया जाय।

विषय विस्तार

यह साम्राज्यवाद इतिहास के अंधयुग, प्राचीनयुग, माध्ययुग से अपने विलासी हिंसात्मक पडाव डालता हुआ आगे बढा तो मेग्नाकार्टा की कोख से व इंग्लैण्ड के साम्राज्यवाद की कोख से प्रजातंत्र नामक शिशु ने जन्म लिया। जो भी साम्राज्यवाद की छत्रछाया में पलता रहा। 16 वीं शताब्दी को लोकशक्ति संर्वधन युग कहा जाता है। किन्तु इसमें मनुष्य ने मनुष्य के विरूध्द ही मोर्चा साध लिया और मानवता कितने ही वादो में बंट गई यथा– पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद, समाजवादोन्मुखी लोकतांत्रिक समाज का बहुजनवाद, सुख की बात समाजवाद ने की और धनवादी वर्ग को अपना शत्रु माना, साम्यवाद ने आर्थिक विषमता की समाप्ति व सर्वजन समान का सपना देखा। दूसरी तरफ तिजोरीवाद

ने मानवतावाद में व्याप्त आर्थिक विषमता को जीवित रखा। अर्थ संस्कृति ने जन्म लिया। तो हर किसी की महत्त्वकांक्षा बढी और हर कोई क्षमता व साधनों के बिना ही सर्वोत्तम व सर्वश्रेष्ठ का भोग करने को उतारू हो गया।[1]

इस युग ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को जन्म दिया जो एक गतिशील अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में उभरी तथा साथ ही साथ नई तकनीकी व खुलेपन का समर्थन किया।[2]

जिन जिन देशो की अर्थव्यवस्था पर पूंजी के चंचल चरित्र के कारण भूमण्डलीकरण के दुष्प्रभाव पडे, उन देशो को पर्यटन और मनोरंजन उद्योग के नाम पर स्त्रियों के निर्यात को प्रोत्साहित किया गया। अमीर देशों में घरेलू काम के लिए और यूरोप के चकलाघरों के लिए करोडो स्त्रियों को अपराधी गिरोहों के जरिये सीमा पार भेजा गया। इस व्यापार में भुमण्डलीकरण राष्ट्रों की छिपी और खुली सहमति शामिल थी।[3]

नारीवादी सिंथिया एनलों ने भूमण्डलीकरण के समर्थकों से पूछा था कि तुम्हारी व्यवस्था में औरते कहा है?[4] यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। जो डॉलरों व पाउण्डों में बिकती औरत की हकीकत बताता है।

इस प्रश्न का जवाब बाजारीकरण के समर्थक देते है कि – औरते राजनीति में है और स्त्री समर्थक नेताओं को वोट देने की तैयारी कर रही है। इसके अलावा वे निर्यात संवर्धन क्षेत्रों में लगी फैक्ट्रियों में बड़े पैमाने पर नौकरी कर रही है। नई विश्व अर्थव्यवस्था ने उन्हें सबसे ज्यादा रोजगार दिया है। साथ ही वे फिल्मों में, मॉडलिंग में, टी वी सीरियलों में, पॉप संगीत में, विज्ञापनों में और सौंदर्य प्रतियोगिताओं में छायी हुई है। वे धीरे–धीरे शासन के उच्चे पदों पर पहुचती जा रही है। और बहुराष्ट्रीय निगमों के बीच उनकी प्रबंधन क्षमता का इस्तेमाल करने की होड़ मची हुई है। अर्थात भूमण्डलीकरण ने औरत को पॉवर वूमन बना दिया है। ये करने के लिए उसे आन्दोलन की जरूरत नहीं पड़ी यह केवल बाजार पूंजी और संचार क्रांति के ताकत के दम पर औरत की दुनिया बदल गई है। वह आत्मनिर्भर होने लगी तथा अपनी निजी आमदनी भी बढी। उसने सौंदर्य उद्योग और पॉप संस्कृति के जरिये उन्होंने अपनी यौनिकता का दो तरफा इस्तेमाल किया है। अर्थात ख्याति और धन कमाने के साथ इन्होंने पुरूष को चमत्कृत कर दिया है। उसने पुरुष के हाथों का खिलौना बनने की बजाय उनके हाथ में पुरुषों को अपनी मर्जी से चलाने की ताकत आ गई है।

शायद औरतों के लिए इतना अच्छा और मर्दो के लिए इतना बुरा वक्त कभी नहीं आया होगा। आर्थिक आजादी ने औरतों के ख्यालों को मुक्त उड़ान भरने का मौका दे दिया है। घर के भीतर आजकल अघोषित यह नियम चल रहा है कि तुम्हारा पैसा तो मेरा है ही, पर मेरा पैसा सिर्फ मेरा है। परिवार को चलाने का दम्भ चूर – चूर हो जाने के बावजूद पुरूष को अपनी परम्परागत भूमिका पूरी तरह निभानी ही पड़ रही है। कोई और सहारा नहीं होने के कारण वह सिर झुका कर काम में लगा हुआ है। उसे परम्परागत अपेक्षाओं के बधनों से प्रधान अर्थव्यवस्था ही हावी हो गई क्योंकि औद्योगिकवाद के साथ उपभोक्तावादी छुटकारा पाने की कोई गुंजाइश नजर नहीं आ रही है। वे तमाम सुविधाएं और विशेषाधिकार उससे छिन चुके हैं जिन्हें वो स्वाभाविक रूप से भोगता था उसकी औरत न केवल सम्पूर्ण आजादी के साथ आगे निकलती जा रही है बल्कि उसने अपने सभी दायित्वों को भी त्याग दिया है।[5]

जैसे ही भूमण्डलीकरण के तहत श्रम का स्त्रीकरण हुआ अर्थात श्रमिकों में स्त्रियों की संख्या बढी वैसे ही नर–नारी सबंधों में परिवर्तन आना शुरू हो गया। नई अर्थनीति और आर्थिक सुधारों के नेतृत्व में नारियां चौतरफा प्रगति कर रही है। प्रत्येक राष्ट्र में पहले से कहीं ज्यादा लडकिया स्कूल जा रही है और वे जल्दी नाम कटाकर पढाई नहीं छोड़ती। नागरिक, राजनीतिक और बौद्धिक नेताओं के रूप में महिलाएं आगे आ रही है। ऐसे कानून बनाये जा रहे है जिससे कार्यस्थलों पर औरतों के साथ बेहत्तर अवसर मुहैया कराने[6] और घरों में स्त्री विरोधी हिंसा रोकने की उम्मीद बंधती हैं।

लेकिन महिला सशक्तिकरण के इस भूमण्डलीकृत अभियान का एक दूसरा पहलू भी है जो कही अधिक सटीक और विश्वसनीय ढंग से साबित करता है कि भूमण्डलीकरण ने औरतों को अतीत की किसी भी कालावधि के मुकाबले अधिक निर्ममता और सम्पूर्णता से एक बिकाऊ जिंस में बदल दिया है। यहा औरत का बिकाऊ माल में बदलना केवल सौंदर्य उद्योग के संदर्भ में या आमतौर पर बाजार की आलोचना के पुराने मुहावरे के तौर पर नहीं बताया जा रहा है।[7]

दास प्रथा के दिनों से भी ज्यादा और सामंतवादी युग की व्यापकता को भी पीछे छोड़ते हुए भूमण्डलीकरण के पिछले कुछ वर्षो से दुनिया में बडें पैमाने पर औरतों के निर्यात के जरिए अरबों खरबो डॉलर की रकम कमाई गयी हैं। औरतों के निर्यातक देशो के प्रति व्यक्ति आय के मुकाबले औरतों के आयातक देशों में प्रति व्यक्ति आमदनी तकरीबन दुगुनी है। ये गरीब देश वही है, जिन्होंने अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक की सलाह पर ढांचागत समायोजन कार्यक्रमों को अपनाया था। ये वहीं देश है जिन्होंने विदेशी पूंजी के आने जाने पर लगी परम्परागत बंदिशों को क्रमशः हटा दिया है। ये भूमण्डलीकरण की होड़ में कूदने वाले देश है लेकिन इस चक्कर में वे कर्ज के बोझ तले दब गए है। उन्हें कृषि एवं उद्योग क्षेत्रों में कर्ज उतारने के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा नहीं मिल पा रही है। इसलिए वे औरतों का निर्यात करके डॉलर और पॉउड हासिल करने में लगे हुए है।[8]

यह व्यापार औरतों के मानवीय राजनीतिक नागरिक अधिकारों का हनन करके सम्पन्न होता है। यह तिजारत मुख्यतः वैश्यावृत्ति, श्रमबाजार और अवैध आव्रजन के लिए की जाती है। यौन व्यापार का परिदृश्य सीधे–सीधे भूमण्डलीकरण से जुड़ा है। नई अर्थ नीति में विदेशी मुद्रा कमाने के मामले में पर्यटन और मनोरंजन उद्योग का बहुत बड़ा स्थान है। विभिन्न शहरों, क्षेत्रों और देशों के लिए दोनों उद्योग वैकासिक रणनीति में प्रमुख स्थान रखते है। ज्यादा गरीबी और बेरोजगारी वाले इलाको में यौन उद्योग सरकारों की मिली भगत से

विकास का जरिया बन गया है। जैसे ही कारखाना उत्पादन और कृषि के क्षेत्र ठप्प होते है वैसी ही सरकारें इस क्षेत्र में आमदनी का जरिया बना लेती है।[9]

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व वर्ल्ड बैंक की मान्यता है कि गरीब देशों को पर्यटन और मनोरंजन उद्योग पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। कौन नहीं जानता कि लौकिकतावाद कई एशियाई देशों के लिए आमदनी का प्रमुख स्त्रोत है। विदेशो में काम कर रही औरते, चाहे वे यौन उद्योग में हो या घरी में नौकरी करती हो, भूमण्डलीकरण के इस युग में सरकारों की विदेशी मुद्रा जरूरत पूरा करने में मुख्य भुमिका निभाती है। फिलीपींस औरतों के निर्यात के मामले में सबसे आगे है। उसके लिए इससे होने वाली आय विदेशी मुद्रा का तीसरा सबसे बड़ा स्त्रोत है।

बांग्लादेश मध्य–पूर्व, जापान, यूरोपीय देशों में अपनी औरते भेजता है, फिलीपींस ने अपनी नर्सो और घरेलू नौकरानियों के निर्यात का कार्यक्रम आधिकारिक रूप से चला रखा है। यह सरकार विदेशियों को ठेके पर सीमित अवधि के लिए तैयारसुदा वधूवो की आपूर्ति का धंधा भी करती है। फिलीपींस औरतें अमेरिका और जापान के अमीरों के घरों में रेडीमेड वधु बनकर जाती है और यौन–दासत्व में अपना समय गुजारती है। फिलीपींस को अमेरीका प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में मुक्त बाजार प्रणाली का शो–केस मानता रहा है। सरकारी प्रश्रय में ही मनोरंजन करने वाली औरतो के रूप में गायिकाओं और नर्तकियों का निर्यात होता है जो इस विशेष संदर्भ में वेश्यावृत्ति के ही दूसरे रूप है।

जॉन जिंजी पेटमेन का कहना है कि किसी जमाने में विदेश जा कर नोकरी करने वाले अधिकांश श्रमिक पुरूष होते थे लेकिन भूमण्डलीकरण के कारण उनमें अब महिलाओं की संख्या बड़ी हो गई। इनमें से ज्यादातर घरेलू कामकाज और बच्चों का देखभाल करती हैं। श्रीलंका भी अपनी औरतों के निर्यात में लगा है। मध्य अमेरीकी देश अपनी लड़किया अमेरीका भेजते है।

औरतों के इस व्यापार से बड़े व्यापारियो, भर्ती एजेंसियों, बैंकों और एअर लाइनों को जोरदार मुनाफा मिल रहा है। निर्यात वाले देश जमकर विदेशी मुद्रा कमा रहे है ताकि कर्जे के दबाव से राहत पा सके और घरेलू मोर्चे पर बेरोजगारी की समस्या थोड़ी बहुत हल हो सके।

भूमण्डलीकरण के इस परिणामों ने एशियाई देशों की औरतो की वही औपनिवेशिक छवि पुष्ट की है। जिसके तहत उन्हें रहस्यमय और यौनक्रिया के लिए उपलब्ध समझा जाता है। यह एक तथ्य है कि डॉलरों और पॉउडों में बिकती औरत का यह किस्सा मीडिया में सबसे कम चर्चा होती है इस पर सबसे कम अनुसंधान हुआ। इसमें पूजी के विभिन्न एजेंटो से लेकर राज्य की संस्था अपराधियों के गिरोह और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की मौन सहमति तक भागीदार है। औरत का ऐसा जघन्य अपमान और इस कदर भीषण शोषण किसी भी युग में नहीं हुआ। इससे पहले अनगिनत बार औरत व्यभिचार की शिकार हुई उसे मात्र एक कोख में सीमित किया गया। वह पुरूष का वंश चलाने के लिए अभिशप्त रही उसके श्रम का मूल्य उसे नहीं मिला उसके ऊपर भयानक और सतत हिंसा हुई, उसके यौनांगो को विकृत करके और तरह – तरह के नियम बनाकर उसकी यौनिकता को काबू करने की कोशिशे की गयी। उसे मताधिकार से वंचित रखा गया, कार्यस्थलों पर यौन शोषण हुआ, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बड़े और छोटे देशों ने अपने–अपने स्वार्थ में करोड़ों औरतों को आयात–निर्यात की मंडी में बेचा–खरीदा हो दास प्रथा में औरत के साथ मर्द भी दास की तरह बिकता था, लेकिन भूमण्डलीकरण के इस दौर में औरत को मर्द के बिकाऊपन से अलग करके विशेष रुप से बेचा जा रहा है। यह केवल अपने या अपने परिवार के लिए गुलामी नहीं कर रही है वरन पूरे अर्थतंत्र के लिए गुलामी कर रही है। यह प्रवासी मजदूर है। नाचने, गाने और मंनोरंजन के नाम पर उसका यौन दुरूपयोग होता है। वधू बनाने के नाम पर वह यौन दास है या सीधे–सीधे कॉलगर्ल के पेशे में लगी है या चकलाघरों में है। और ये सभी भूमिकाएं उसे विदेशी जमीन पर अजनबी आबो – हवा में पूरी तरह आरक्षित होकर निभानी पड़ रही है।

इस घोर अनैतिक आयात–निर्यात ने दुनिया भर की गरीब औरतों पर क्रुरतम हिंसा पर कहर बरपा दिया है। यूरोप में हर वर्ष गला घोंट कर मार दी गयी, पीट – पीट कर मार डाली गयी अथवा गोली से उड़ा दी गयी सैकडों औरतों की लाशें बरामद होती है। दूसरी नस्लों और दूसरे देशों की इन औरतो ने किसी न किसी प्रकार खुद को वेश्यावृत्ति में धकेले जाने का विरोध होता है। यूरोपीय पुलिस संगठन यूरोपोल का दावा है कि ऐसी ही न जाने कितनी लाशें सफाई से ठिकाने लगा दी जाती है जिससे उनकी गिनती नहीं हो पाती। पूर्वी और मध्य यूरोप में जवान लडकियों की तस्करी करने वाले गिरोह बेहद निर्मम और अमानवीय तरीके अपनाने के लिए बदनाम है।

किसी भी 22–23 वर्ष से कम की गरीब औरत को घरेलू कामकाज या होटल में वेटर की नौकरी दिलवाने का झांसा देकर फंसाया जाता हैं। फिर उसकी गैर–कानूनी यात्रा शुरू होती है और किसी मुकाम पर अचानक उसका पासपोर्ट तथा अन्य कागजात चोरी हो जाते है फिर उस मजबूर अकेली और आरक्षित लडकी को कोई चकला मालिक कुछ हजार डॉलर में मवेशी की तरह खरीद लेता है। विरोध करने पर उसकी जमकर पिटाई होती है और बार बार बलात्कार होता है। इसके बाद शुरू होती है उसकी यौन दासता, जिसमें रोज दस से पंद्रह ग्राहकों को निपटाना पड़ता है।

औरतों की सप्लाई को जारी रखने से जुडी–व्यापकतर समस्या का सामना किये बिना किसी नैतिक उपदेश का कोई लाभ नहीं होने वाला है और समस्या है एशियाई गरीबी का स्त्रीकरण।

इन देशों की गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी –घर की जिम्मेदारी के कारण मजबुरी में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने यह हाल कर दिया। भविष्य में अदाजा लगाना और कठिन है। दरअसल भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में कमजोरों के लिए सिर्फ एक ही जगह है उसे उत्तरोत्तर हाशिये पर सिमटते चले जाना और यह मनुष्य से मवेशी में बदल जाने के लिए अभिशप्त है। चूंकि औरत

परम्परागत रूप से कमजोर है। इसलिए भूमण्डलीकरण का कहर सबसे ज्यादा उसी को झेलना पड़ रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अंसारी, एम. ए. महिला और मानवाधिकार पृष्ठ 70*
2. *www.ilo.org/public/English/wcsdg/docs/report.pdf page 70*
3. *दूबे, ए.के. भारत का भूमण्डलीकरण– पितृ सत्ता के नये रूप पृष्ठ 112*
4. *सिथिया, एनलो बनानाज बेसिज एण्ड बीचिजः मेकिंग फेमिनिस्ट सेंस ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, लंदन प्रिंटर 1989*
5. *नायर, राज द बैकलैश द संडे ट्रिब्यून 12 नव. 2000*
6. *विशाखा बनाम राजस्थान राज्य AIR 1997 SC 3011*
7. *घरेलू हिंसा निरोधक अधिनियम – 2005*
8. *बरसफर्ड, सूसन वी., वूमेन्स राइट्स वूमन लाइव्ज, फोर्ड फाउडेशन रिपोर्ट– 2000*
9. *सासेन, सास्किया वूमन बर्डन : काउंटर ज्योग्राफीज ऑफ ग्लोबलाइजेशन एण्ड फेमिनाइजेशन ऑफ सरवाइवल 2000, दि ट्रस्टीज ऑफ कोलंबिया यूनिवर्सिटी– न्यूयॉर्क पृष्ठ 53*